प्रातः क्लास 21-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। इसको कहा जाता है रूहानी ज्ञान वा स्प्रीचुअल नालेज। स्प्रीचुअल नालेज सिर्फ एक रूहानी बाप ही दे सकते हैं। और कोई भी मनुष्य मात्र में रूहानी नालेज होती नहीं। रूहानी नालेज देनेवाला एक ही है। जिसको ही ज्ञान सागर कहा जाता है। हरेक मनुष्य में अपनी2 खुबी होती है। बैरीस्टी बैरीस्टर है, डाक्टर डाक्टर है। हरेक की डियुटी पार्ट अलग2 है। हरेक की आत्माको अपना पार्ट मिला हुआ है। कितनी छोटी आत्मा है। वन्डर है ना। गाते भी हैं भृकुटि के बीच चमकता है गजब सितारा। यह भी गाया जाता है निराकार आत्मा का शरीर है तख्त। है बहुत छोटी सी बिन्दी। और सभी आत्मायें एक्टर्स हैं। एक जन्म के फिचर्स न मिले दूसरे से। एक जन्म का पार्ट न मिले दूसरे से। किसको भी पता नहीं हम पास्ट में क्या थे। फिर फ्युचर क्या बनेंगे। यह बाप ही संगम पर बैठ समझाते हैं। सुबह को तुम बच्चे याद की यात्रा में बैठते हो। तो बुझी हुई आत्मा ~~प्रज्वलित~~ = परज्वलित होती रहती है। क्योंकि आत्मा में बहुत जंक लगी हुई है। बाप सोनार का भी काम करते हैं। पतित आत्मायें निर्मल खाद पड़ी हैं उनको प्युर बनाते हैं। खाद पड़ती है ना। चान्दी, ताम्बा, लोहा आदि। नाम भी ऐसे हैं गोल्डेन एज। सिल्वर एज, कापर, आसर एज। सतोप्रधान सतो रजो तमो। बच्चों को यह तो समझाया जाता है यह बातें और कोई मनुष्य नहीं समझायेंगे। एक ही सदगुरु समझाते हैं। सदगुरु अकाल कहते हैं ना। उस सदगुरु का भी तख्त चाहिए ना। जैसे तुम आत्मा का अपना2 तख्त है उनको भी तख्त लेना पड़ता है। कहते हैं मैं कौन सा तख्त लेताहूं दुनिया में कोई को पता नहीं। वह तो नेती2 करते आये हैं। हम नहीं जानते हैं। तुम बच्चे भी समझते हो पहले2 हम कुछ भी नहीं जानते थे। उनको बेसमझ कहा जाता है। भारतवासी समझते हैं हम बहुत [illegible] अभी बेसमझ बन पड़े हैं। तो कुछ भी नहीं जानते। शास्त्रों में बहुत गपोड़े लगे हुये हैं। कल्प की इतनी आयु है, ईश्वर सर्वव्यापी है। यह भूसा बुधि में भरा हुआ है। बाप कहते हैं तुम शास्त्र आदि भल कुछ भी पढ़े हो यह सभी अभी भूल जाओ। सिर्फ एक बाप को याद करो। गृहस्थ व्यवहार में भी भल रहो। सन्यासी के फालोअर्स भी अपने2 घर में रहते हैं ना। कोई भी सन्यासियों के साथ नहीं रहते। कोई सच्चे2 फालोअर्स होते हैं तो उनके साथ ही रहते हैं। बाकी तो कोई कहां कोई कहां रहते हैं। तो यह सब बाप बैठ समझाते हैं। इसको कहा जाता है ज्ञान की डांस। योग तो है सायलेन्स। ज्ञान के होते है डांस। योग में बिल्कुल शान्त रहना होता है। डेड सायलेन्स। परन्तु इसका भी अर्थ कुछ नहीं जानते। बाप आकर समझाते हैं। सन्यासी लोग सायलेन्स के लिए जंगल में जाते हैं। परन्तु वहां थोड़ी ही शान्ति मिल सकती है। एक कहानी भी हेरानी का हार गले में पड़ा था और ढूढ़ती थी बाहर। यह मिशाल है शान्ति के लिए। बाप इस समय जो बातें समझाते हैं, वह दृष्टान्त फिर भक्तिमार्ग में चली आती हैं। बाप इस समय पुरानी दुनिया को बदल कर नया बनाते हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। यह तो तुम बच्चे ही समझ सकते हो। बाकी तो सभी हैं कांटे। कांटों का जंगल है ना। कौरव घर है। सन्यासी भी तमोप्रधान हो गये हैं। यह दुनिया ही तमो प्रधान पतित है। क्योंकि विष से पैदा होते हैं। देवतायें तो विष से पैदा नहीं होते। उन्हों को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। वायसलेस वर्ल्ड। अक्षर कहते हैं परन्तु इसका अर्थ नहीं समझते। पत्थर बुधि है ना। पत्थर बुधि रहते कलियुग में हैं। पारस बुधि होते सतयुग में हैं। पारस बुधि ही पुनर्जन्म लेते2 पत्थर बुधि बने हैं। तुम ही पूज्य से पुजारी बनते हो। बाबा के लिए ऐसे नहीं कहा जाता। बाप कब पुजारी बनते नहीं। उनको कितना कलंकित कर देते हैं। बाप न पुजारी बनते, न ठिक्कर भित्तर में जाते हैं। वह तो पत्थर भित्तर कण कण में कह देते परमात्मा है। बाप कहते हैं यह बिल्कुल ही जंगली जनावर हैं। बाप कोभी पत्थर भित्तर बनादिया है। तब बाप कहते हैं जब2 भारत में ग्लानी होती है... वह लोग तो सिर्फ ऐसे ही श्लोक पढ़ते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं जानते। तुम उन से पूछ सकते हो। भगवान कहते हैं मैं इनसाधुओं का भी उधार करता

तो तुम भी पतित ठहरे ना। तब तो पाप काटने लिए गंगा स्नान करने जाते हैं। वह समझते हैं शरीर ही पतित बनता है। आत्मा नहीं बनती। बाप कहते हैं पहले2 आत्मा पतित बनती है तब शरीर भी पतित बनता है। सोने में ही खाद पड़ती है। फिर ज़ेवर भी ऐसा बनता है। परन्तु वह सभी हैं भक्तिमार्ग में। इसमें तो यह जैसे बादशाह है* बड़े बड़े साधु ऋषि मुनि आद। प्रजीडेन्ट प्राईम मिनिस्टर आद जो भी बड़े2 अथार्टी वाले होंगे वह भी उनके आगे माथा जरूर झुकावेंगे। महऋषि योगी आद जो भी आते हैं यह सभी हैं सर्वव्यापी कहने वाले। कण-कण में परमात्मा कह देते हैं। उनको ठिक्कर भित्तर में कह और अपने को फिर कह देते अहम् ब्रह्मास्मि। हम सभी ईश्वर हैं। सर्वव्यापी ईश्वर है। बाप समझाते हैं हरेक में तो आत्मा विराजमान है। कहा भी जाता है जीव आत्मा। जीव परमात्मा कहा नहीं जाता। महान आत्मा कहा जाता है। आत्मा ही पार्ट बजाती है। भिन्न2 शरीर लेती पार्ट बजाती है। तो योग है बिल्कुल सायलेन्स। फिर यह है ज्ञान की डांस। बाप की ज्ञान डांस भी इन्हों के सामने होगी जो शौकीन होंगे। बाप जानते हैं किसमें कितना ज्ञान है। कितना उनमें योग का भी नशा है। टीचर तो जानते होंगे ना। बाप भी जानते हैं कौन अच्छे2 गुणवान बच्चे हैं। अच्छे2 बच्चों को हीजहां-तहां बुलावा होता है। बच्चों में भी नम्बरवार हैं। प्रजा भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बनती है। यह स्कूल अथवा पाठशाला है ना। पाठशाला में हमेशा नम्बरवार बैठते हैं। समझ सकते हैं यह फलाना होशियार है। यह मीडियम है। यहां भी यह बेहद का क्लास है। इसमें किसको नम्बरवार बैठा नहीं सकते। बाबा जानते हैं हमारे सामने यह तो ईडीयट्स बैठे हुये हैं। जिन में कुछ भी ज्ञान नहीं है। सिर्फ भावहै। बाकी तो न योग है न ज्ञान है। यह निश्चय है बाबा आया हुआ है उन से हमको वर्सा लेना है। वर्सा तो सभीको मिलना ही है। परन्तु राजाई में तो नम्बरवार पद है ना। जो बहुत सर्विस करते हैं उनको अच्छी प्राईज़ मिलती है। यह [illegible] प्राईज़ पैसे रहते हैं। जो राय देते हैं माथा मारते हैं उनको प्राईज़ मिल जाती है। अभी तुम जानते हो विश्व में सच्ची2 शान्ति श्रीमत पर कल्प पहले भी स्थापन हुई थी। सो अभी तुम कर रहे हो। वह लोग कान्फ्रेन्स करते रहते हैं* शान्ति कैसे हो। बाप कहते हैं उन से पूछो तो सही विश्व में शान्ति कब थी? कबसुनी वा देखी है? कस प्रकार की शान्ति मांगते हो। कब थी? तुम प्रश्न पूछ सकते हो। क्योंकि तुम जानते हो। प्रश्न पूछे और खु जानता न हो तो उन को क्या कहेंगे। तुम अखबारों द्वारा पूछो कि किस प्रकार के शान्ति मांगते हो। शान्तिधाम तो है जहां हम आत्मायें रहती हैं* ब्रह्मलोक में। बाप कहते हैं एक तो शान्तिधाम को याद करो दूसरा सुखधाम को याद करो। सृष्टि के चक्र का पूरा ज्ञान न होने के कारण शास्त्रों आद में कितने गपोड़े लगा दिये हैं। तुम बच्चे जानते हो हम ड [illegible] सिरताज बनते हैं। फिर भक्ति मार्ग में सिंगल ताज वाले बनते हैं। परन्तु उन बिचारों को कुछ भी पता नहीं। उसको कहते ही हैं कांटों का जंगल। तुम जानते हो हम भी फूल थे। फिर कांटे बने हैं। फिर अभी फूल बनते हैं। हम देवता थे। अभी मनुष्य बन गये हैं। देवताओं को देवता कहा जाता है। मनुष्य नहीं। क्योंकि देवीगुणों वाले होते हैं। जिन में अवगुण है वह कहते हैं मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। कुछ भी जानते नहीं। शास्त्रों में जो बातें सुनो है वह सिर्फ गाते रहते हैं। अचतम् केशवम्..... अर्थ कुछ नहीं समझते। जैसे तोते को सिखलाया जाता है हू बहू मेढक मिशल ट्रां-ट्रां करते रहते हैं। जो भी सतसंग है वहां हैं मेढकों की ट्रां-ट्रां। बाप समझाते हैं ऐसे मेढकों का भी मैं कल्याण करता हूं। पावन बनने लिए ही मुझे बुलाया है बाबा आकर हम सभी पतितों को पावन बनाओ। पावन दुनिया है दो। ब्रह्मलोक को वास्तव में दुनिया नहीं कहेंगे। वहां तो आत्मायें रहती हैं। इसलिए उनको=वा निराकारी दुनिया कहा जाता है। वास्तव में पार्ट बजाने की दुनिया तो है यह। वह है शान्तिधाम। बाप समझाते हैं मैं तुम बच्चों को अपना परिचय बैठ देता हूं। मैं आता ही उस में हूं जो अपने जन्मों को नहीं जानते। यह भी अभी सुनते हैं। मैं इन में ही प्रवेश करता हूं। पुरानी पतित दुनिया रावण की दुनिया है ना। जो नम्बरवन पावन [illegible] फिर नम्बर लास्ट पतित बना है। उनको ही अपना रथ बनाता हूं। फर्क सो लास्ट में आया है फिर फर्क

मैं जाना है। चित्र में भी समझाया है ब्रहमा द्वारा मैं आदी सनातनदेवी-देवता धर्म की रचनारचताहूं। ऐसे तो नहीं कहते हैं मैं देवी-देवता धर्म में आता हूं। जिस शरीर में आकर बैठते हैं वही फिर जाकर नारायण बनते हैं। विष्णु कोई और नहीं। ल०ना० के अथवा राधे-कृष्ण की जोड़ी कहो। विष्णु कौन हैं यह कोई भी नहीं जानते। बाप कहते हैं मैं तुमको सभी वेदों शास्त्रों का चित्रों आद का राज़ समझाताहूं। मैं जिसमें प्रवेश करता हूं वह फिर यह बनते हैं। प्रवृति मार्ग है ना। ब्रहमा और सरस्वती फिर यह बनते हैं। इन में मैं प्रवेश कर ब्राहमणों को ज्ञानदेता हूं। तो यह ब्रहमा भीसुनते हैं। यह फर्स्ट नम्बर में सुनते हैं। यह हैबड़ी नदी ब्रहमपुत्री। मेला भी सागर और ब्रहमपुत्री नदी नीलगता है। जहां सागर और नदी का संगम होता है। मैं इसमें प्रवेश करता हूं। यह वह बनते हैं। इनको बनने में एकसेकण्डलगता है। सा० हो जाता हैं। और निश्चय घट हो जाता हैं। मैं यह बनने वाला हूं। विश्व का मालिक बनने वाला हूं। तो फिर यह गधाई क्या करेंगे। सभी छोड़ दिया। तुमको भी मालूम हुआ है। यह दुनिया खत्म होनी है तो झट भागी। बाबा ने नहीं भगाया। हां भठी बननी थी। शास्त्रों में तो दन्त कथाएं लिख दी हैं। यह भी पार्ट है। कहते हैं कृष्ण ने भगाया। अच्छा कृष्ण ने भगाया तोपटरानी बनाया ना। तुम इस ज्ञानसे विश्व के महाराजा महारानी बनते हो। यह तो अच्छा ही हैं। इसमें गाली खाने की दरकार ही नहीं। फिर कहते हैं कलंक जब लगती है तो तब हा कलंकीधर बनते हैं। कलंक लगते हैं शिव बाबा पर। कितनी ग्लानी करते हैं। बराह अवतार, मछ अवतार, परशुराम अवतार। कितना हिंसक बना दिया हैं। इतनी रानियां दे व्यभिचारी बना दिया है। क्या2 शास्त्रों में लिख दिया है। ऐसे2 बातें पढ़ते2पत्थर बुधि बन पड़े हैं। कह देते हैं हम आत्मा सो परमात्मा। परमात्मा सो आत्मा। अभी बाप समझाते हैंऐसे नहीं हैं। हम आत्मा सो अभी ब्राहमण बनते हैं। ब्राहमण हैं सभीसे ऊंच कुल। इनको डिनायस्टी नहीं कहेंगे। डिनायस्टी अर्थात जिसमें राजाई होती हैं। यह तुम्हारा कुल है। बहुत सहज। हम ब्राहमण सो देवता बनने वाले हैं। इसलिए दैवीगुण जरूर धारण करना हैं। सिगरेट बीड़ी आद का इनदेवताओं को भोग लगाते हो क्या। श्रीनाथ द्वारे में बहुत धो के माल बनाते हैं। भोग इतनालगताहै जो फिर दुकान लग जाताहै। यात्रु जाकर लेते हैं। मनुष्यों की बहुत भावना रहती हैं। मक्खियां बैठती गन्द करती रहती हैं। वह फिर खाना चाहिए। खुली चीज़ पर जरूर बैठेंगी गन्द करेंगी। सतयुग में तो ऐसी बातें होती ही नहीं। ऐसी मक्खी होंगी जो किस चीज़ को खराब करे। ऐसी बिमारी आद होती ही नहीं। बड़े आदमी पास सफाई भी बहुत होती है। वहां तो ऐसी बातें भी नहीं होती। वहां ऐसे रोग आद होते ही नहीं हैं। यह सब बिमारियां द्वापर से निकलती हैं। बाप आकर तुमको एवरहेल्दी बनाते हैं। तुम पुरूषार्थ करते रहे बाप को याद करने का जिससे ही तुम एवरहेल्दी बनते हो। आयु भी बड़ी होती है। कल की बात है। 150वर्ष आयु थी ना। अभी तो 35 वर्ष है। एवरेज। क्योंकि वह योगी थे। यह भोगी हैं। तुम राजयोगी राजऋषि हो। इसलिए तुम पवित्र हो। परंतु यह है पुरषोत्तम संगम युग। बाजु में रावण राज्य भी है। पुरूषोत्तम युग कहा जाता है, मास वा वर्ष नहीं। बाप कहते हैं मैं कल्प2 पुरूषोत्तम संगम युगे2 आता हूं। ऐसे नहीं अनेक पुरूषोत्तम संगम युग बीत चुके हैं और अनेक आवेंगे। नई दुनिया और पुरानी दुनिया के बीच को कहा जाता है संगम। यह बाप आकर चेंज करते हैं। बाप रोज2 समझाते रहते हैं फिर भी कहते हैं एक बात कब भी नहीं भूलना। पावनबनना है तो मुझे याद करो। अपने को आत्मा समझो। देह के सभीधर्म त्यागो। अभी तुमको वापस जाना है। मैं आया हूं तुम्हारी आत्मा को साफ करने। जिससे फिर शरीर भी पवित्र मिलेगा। यहां पवित्र शरीर होता नहीं क्योंकि विकार से पैदा होते हैं। आत्मा जब सम्पूर्ण पवित्र बनती है तो तुम पुरानी जुती को छोड़ते हो। फिर नई मिलेगी। तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। तुमको कोई पूज नहीं सकते। क्योंकि शरीर तो पतित हैं ना। तुम्हारा गायन है वन्देमातरम्। वह लोग वन्देमातरम् किसको कहते हैं। धरती को तो नहीं कह सकते। धरती को पवित्र तुम बनाते हो। तुम बच्चों को कहा जाता है वन्देमातरम्।

4 तुम मताओं ने स्वर्ग के द्वार खोले

तुम मताओं ने स्वर्ग की द्वार खोली हैं। बाकी भक्ति मार्ग की कोई भी बात है नहीं। शास्त्रों में क्या2 लिख दिया है। उसको कहा जाता है दन्त कथा। नावेल्स अलग चीज़ है, शास्त्र अलग चीज़ है। बाबा जो समझाते हैं वह बिल्कुल न्यारी चीज़ है। आशुक माशुक का भी समझाया जाता हैं। वह एक शरीर पर आशुक होते हैं। विकार के लिए नहीं। शरीर पर मोहित हो जाते हैं। भक्ति मार्ग मे भी आशुक माशुक होते हैं। पूछं वाले हनुमान को भी माशुक बनाते, तो सूढ़ वाले गणेश को भी माशुक बनाते हैं। ढेर को बनाते हैं। भक्ति मार्ग में तुम अनेकों के आशुक थे। सभी कहते हैं हे भगवान हे राम। दुःख में सभी उनको याद करते हैं। तुम आशुक माशुक हो। सिमरण करते हैं। बाबा आप आवेंगे तो हे भगवान आप आवेंगे तो हम आप का ही बनेंगे। दूसरा न कोई।

तो अभी बाप याद दिलाते हैं। बाप तो बच्चों को माला-माल कर देते हैं। यहां तो कितने दुःख हैं। बच्चे भी ऐसे कपूत निकल पड़ते हैं जो जो बाप का गला ही काट लेते हैं। पैसा बरबाद कर देते हैं। बाप के होते बच्चा ऐसे उड़ा देते हैं। बाप कुछ कह न सके। क्योंकि वार्स है। कलियुग का अन्त है ना। यह तो अनुभवी है। बाबा ने रथ भी अनुभवी लिया है। बाप खुद समझाते हैं यह है भाग्यशाली रथ। इस मकान अथवा रथ मेंआत्मा बैठी है। जिसमें बाप बैठकर तुम बच्चों को हीरा जैसा देवता बनाते हैं। आगे थोड़े ही समझते थे। बिल्कुल तुच्छ बुधि थे। अभी तुम समझते हो। तो फिर अच्छी रीतपुरुषार्थ करना चाहिए। स्कूल में टाईम वेस्ट करने से नापास हो जावेंगे। बाप तुमको बहुत बड़ी लाटरी देते हैं। कोई राजा के घर जाकर जन्म लेते हैं तो जैसे लाटरी मिली ना। कंगाल है तो उनको लाटरी थोड़े ही कहेंगे। यह हैसब से ऊंच लाटरी। इसमें टाईम वेस्ट न करना चाहिए। बच्चा जानते हैं माया की वार्किंग है। थोड़ी2 मायादेहअभिमान में लाती हैं। तुम्हारा बाप से योग है डायरेक्ट। सम्मुख बैठे हैं ना। इसलिए यहां रिफ्रेश होने आते हो। ड्रामा अनुसार। बाप कहते हैं मैं तुमको जो समझाता हूं वह धारण करना है। यह ज्ञान अभी तुमको मिलता है। फिर यह प्रायः लोप हो जाता है। ज्ञान है ही सदगति के लिए। सदगति मिलगई फिर ज्ञान की दरकार ही नहीं। सभी को सदगतिदे देता हूं। ढेर आत्माएं चली जाती हैं। शान्तिधाम में। बाकी ज्ञान किसको दें। फिर भक्ति चलती हैं। आधा कल्प यह वेद शास्त्र आद पढ़ते आये हो। जिससे दुर्गति ही होती है। कोई केसीधा कहो तो बिगर पड़ेंगे। अरे तुम तो कहते हो भक्तों का फल भगवान देंगे। तो जब भक्ति दुर्गति है ना। तब तो बाप आकर सदगति करते हैं। तुम शंकराचार्य को भी लिख सकते हो तुम तो पुजारी हो ना। पुजारी अपनको पूज्य कहला न सके। पूज्य होते हैं सतयुग में। पुजारी होते हैं कलियुग। यह सभी समझने की बातें हैं। यह भी गायन है नाजूतों में जाकर बैठते थे सुनने के लिए। सुनते2 फिर युक्ति से समझा सकते हैं। जब उन में 5-7 निकल आवेंगे तब वह भी समझेंगे। यह क्या बात कहते है। अभी नहीं समझेंगे।

मूल बात समझाई जाती है बाप को याद करो तो तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के विकर्म विनाश होंगे। यह नालेज है सोर्स आफ इनकम। तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो। स्वर्ग के मालिक बनते हो। वहां तो सभी सुखी हैं। बाप याद दिलाते हैं तुमको कितने स्वर्ग के सुख दिये थे तुम विश्व के मालिक थे। फिर सब गंवाये दिया। रावण के गुलाम बन गये हो। राम और रावण का यह वन्डर फुल खेल है। बाप समझाते हैं यह फिर भी होगा। अनादी बना बनाया खेल है। कब बना यह नहीं सकते। बाप समझाते हैं इन गुरुओं आद को मारो गोली। यह सभी भक्ति मार्ग के हैं। गायन भी है सतगुरु तारे। बाकी बोरे कौन? असत्य बोलने वाले बोरते हैं। समझने की बात है ना। सन्यासी लोग घर बार छोड़ कर जाते हैं आरफन बना देते हैं। उनको तुम गुरु कैसे कहते हो। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

:-: : ***: : -:

शिव बाबा याद है? स्वर्ग की बादशाही याद है? दैवी गुण धारण है?